सच्चे भक्त
के लिए
कुछ भी
अशक्य
नहीं है।
-महात्मा गांधी-

दैनिक
लोकजीवन
www.lokjeewan.com
जयपुर एवं भीलवाड़ा से प्रकाशित राज्य स्तरीय समाचार पत्र
संस्थापक - स्व. डॉ. शिवकुमार जी त्रिवेदी

लोक जीवन में विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें:-
- : जयपुर : -
0141-4038281
- : भीलवाड़ा : -
8306792625

वर्ष- 19 | अंक- 198 | जयपुर. मंगलवार . | 17 नवम्बर , 2026 | RNI No. RAJHIN/2008/26744 | मूल्य 1 रूपया | पृष्ठ - 4

न्यूज इनबॉक्स

रिजिजू का राहुल पर हमला, बोले- खुद का मजाक बनवाया, देश को भी शर्मिंदा किया



नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा, खुद का मजाक बनवाया, देश को भी शर्मिंदा कराया। रिजिजू ने राहुल गांधी को सलाह देते हुए कहा कि अगर वह कुछ कदम उठाते हैं तो कांग्रेस लोगों का भरोसा फिर से जीत सकती है। रिजिजू ने कहा कि राहुल गांधी को भारत में ज्यादा समय बिताना चाहिए और बार-बार होने वाली गुप्त विदेशी यात्राओं से बचना चाहिए। उन्होंने वरिष्ठ नेताओं का सम्मान करने और बुजुर्गों से सीख लेने की भी सलाह दी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी को भारत विरोधी लोगों से मुलाकात नहीं करनी चाहिए और उनके एजेंडे को बढ़ावा देना बंद करना चाहिए। उन्होंने बीजेपी, आरएसएस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति गहरी नफरत खत्म करने की बात कहते हुए कहा कि बीजेपी को राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के तौर पर देखा जाना चाहिए, दुश्मन के तौर पर नहीं।

रिजिजू ने राहुल गांधी से संसद को ज्यादा गंभीरता से लेने और सांसदों को बहस और चर्चा में हिस्सा लेने देने की अपील की। उन्होंने संविधान का सम्मान करने और संवैधानिक संस्थाओं का सम्मान करने की बात भी कही। उन्होंने कांग्रेस में आंतरिक लोकतंत्र की जरूरत बताते हुए कहा कि पार्टी को लोकतांत्रिक तरीके से काम करने देना चाहिए और वंशवादी राजनीति को खत्म करना चाहिए।

रिजिजू का यह बयान ऐसे समय में आया है जब बीजेपी ने हैदराबाद में आयोजित कांग्रेस के भारत सम्मेलन 2026 को लेकर कांग्रेस पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। भाजपा का कहना है कि कांग्रेस ने ऐसे विदेशी वक्ताओं को मंच दिया, जिनके कथित तौर पर अरबपति निवेशक जॉर्ज सोरोस से जुड़े संगठनों से संबंध हैं और जिन्होंने भारत के खिलाफ बयान दिए हैं।

बीजेपी ने राहुल गांधी पर विदेशी ताकतों की 'कठपुतली' की तरह काम करने और नरेंद्र मोदी सरकार को हटाने के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने का आरोप लगाया है। पार्टी ने सवाल उठाया है कि क्या यह सम्मेलन बातचीत का मंच है या भारत और उसकी लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ कथित नैरेटिव को अंतरराष्ट्रीय समर्थन देने की कोशिश।

'बुलेटप्रूफ केबिन भी उन्हें नहीं बचा पाएंगे'

गैंगस्टर गोल्डी के निशाने पर अमिताभ और अभिषेक बच्चन



मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन और उनके बेटे अभिषेक बच्चन को जान से मारने की धमकी मिली है। लॉरेंस बिश्नोई के करीबी गैंगस्टर गोल्डी ढिल्लों ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बच्चन परिवार को निशाना बनाने की धमकी दी है। रिपोर्ट के अनुसार, गोल्डी ढिल्लों ने सोमवार को फेसबुक पर एक पोस्ट साझा की। इसमें उसने दावा किया कि मुंबई में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की ओर से उसके दो सहयोगियों को गिरफ्तार किए जाने से उसके गिरोह की गतिविधियों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

उसने कहा कि गिरफ्तारियां उनके किसी भी कथित हमले की योजना को रोक नहीं सकती हैं। कोई भी बुलेटप्रूफ ग्लास उन्हें नहीं बचा पाएगा। गैंगस्टर ने अपनी पोस्ट में गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान विकास ठाकुर और दीपक सिंह के रूप में बताई। उसने दावा किया कि दोनों केवल उसके गुट से जुड़े हैं और उनका किसी दूसरे गैंग से कोई संबंध नहीं है। ढिल्लों ने यह भी दावा किया कि मुंबई में उसके 200 अन्य गुर्गे मौजूद हैं और वे अपने काम को अंजाम देने के लिए तैयार हैं। उसने कहा कि उसके सहयोगियों की गिरफ्तारी से उसके नेटवर्क की गतिविधियां रुकने वाली नहीं हैं।

पोस्ट में गोल्डी ढिल्लों ने अमिताभ बच्चन और अभिषेक बच्चन का नाम लेते हुए उन्हें सीधे धमकी दी। उसने कहा कि दोनों चाहे कितने भी बुलेटप्रूफ केबिन बनवा लें या सुरक्षा के कितने भी इंतजाम कर लें, उन्हें उन्हीं केबिन के अंदर मार दिया जाएगा। गैंगस्टर ने अपनी पोस्ट में 1984 के सिख विरोधी दंगों का भी जिक्र किया। उसने दावा किया कि दंगों के लिए जिम्मेदार लोगों को कभी माफ नहीं किया जाएगा।

ऐसे लोगों को उनकी पहचान या वे दुनिया के किसी भी देश में रहते हों, ढूंढकर निशाना बनाया जाएगा। सोशल मीडिया एक्स पर अमिताभ बच्चन की दो शब्दों वाली पोस्ट ने फैंस के बीच अटकलें तेज कर दी हैं। अमिताभ बच्चन ने पोस्ट में लिखा 'बच गए'। मेगास्टार को जवाब देते हुए कई लोगों ने उनसे इन शब्दों के पीछे का संदर्भ बताने को कहा है।

झइस पोस्ट को 1.3 मिलियन इम्प्रेशन मिले हैं और इस पर कई रीट्वीट और प्रतिक्रियाएं आई हैं। कुछ लोगों ने अमिताभ बच्चन की इस पोस्ट को विदेश में बैठे एक गैंगस्टर से जुड़े दो कथित शार्पशूटरों की गिरफ्तारी से जोड़कर देखा है।

पंचायत चुनाव में ग्रामीणों का उत्साह, सरपंच पदों पर 89.01% मतदान

जमवारामगढ़ में 89.86 प्रतिशत, आंधी में 89.25, बस्सी में 89.01 एवं तूंगा में 87.01 प्रतिशत

जयपुर (कासं)। मतदाताओं ने पंचायतीराज आम चुनाव के चौथे चरण में सोमवार को जयपुर जिले की चार पंचायत समितियों बस्सी, तूंगा, जमवारामगढ़ एवं आंधी की 140 ग्राम पंचायतों में सरपंच पद के लिए वोट डाले । चारों पंचायत समितियों में पंजीकृत 4 लाख 7 हजार 280 मतदाताओं में से 3 लाख 62 हजार 502 ने वोटिंग की। इस प्रकार सरपंच पदों के लिए कुल 89.01 प्रतिशत मतदान हुआ। जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) संदेश नायक ने बताया कि पंचायत समितिवार प्राप्त अंतिम आंकड़ों के अनुसार आंधी की 32 ग्राम पंचायतों में 91 हजार 16 मतदाताओं में से 81 हजार 229 ने मतदान किया। यहां 89.25 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। बस्सी की 42 ग्राम पंचायतों में 1 लाख 29 हजार 159 मतदाताओं में से 1 लाख 14 हजार 968 ने मताधिकार का प्रयोग किया तथा मतदान प्रतिशत 89.01 रहा। जमवारामगढ़ की 42 ग्राम पंचायतों में कुल 1 लाख 22 हजार 890 मतदाताओं में से 1 लाख 10 हजार 430 ने मतदान किया। यहां 89.86 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। वहीं तूंगा की 24 ग्राम पंचायतों में 64 हजार 215 मतदाताओं में से 55 हजार 875 ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया तथा मतदान प्रतिशत 87.01 रहा। प्रात: 10 बजे तक 19.71 प्रतिशत, दोपहर 1 बजे तक 43.63 प्रतिशत, अपराह्न 3 बजे तक 61.45 प्रतिशत तथा सायं 6 बजे तक 85.27 प्रतिशत और अंतिम रूप से मतदान प्रतिशत 89.01 प्रतिशत रहा।



परिवार के बारे में कही गई गलत बातें सामने लाना चाहती थी : सोनिया

'बिलॉन्गिंग : अ जर्नी ऑफ लव' का विमोचन, राहुल-प्रियंका ने संस्मरण लिखने के लिए किया प्रेरित

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की अध्यक्ष सोनिया गांधी की आत्मकक्षा का सोमवार को विमोचन हुआ। उनकी किताब का नाम 'बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव' है। इसका आसान हिंदी अर्थ है- 'अपनापन: प्यार का एक सफर'। सोनिया गांधी ने कार्यक्रम में किताब लिखने के पीछे की वजह बताई। उन्होंने कहा, मेरे परिवार के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। मुझे किताब लिखने के लिए राहुल गांधी और प्रियंका ने प्रेरित किया। शुरू में मेरे लिए यह बहुत मुश्किल था।

सोनिया गांधी ने कहा कि उन्होंने यह किताब इसलिए लिखी, क्योंकि उनके परिवार के बारे में वर्षों से बहुत कुछ कहा गया, जिसमें से काफी बातें उनके मुताबिक वास्तविकता से दूर थीं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि उनकी सास इंदिरा गांधी, पति राजीव गांधी और बेटे राहुल गांधी के बारे में भी कई ऐसी बातें कही गईं, जो सही नहीं थीं। उन्होंने कहा कि लोगों के सामने अपने परिवार और अपने जीवन का पक्ष रखने की इच्छा ही इस किताब को लिखने की बड़ी वजह बनी। इससे पहले भी सोनिया गांधी ने कहा था कि वह अपने परिवार को वैसे पेश करना चाहती थीं जैसे उन्होंने उन्हें देखा और जाना।



उन्होंने बताया कि शुरुआत में उनके लिए अपनी निजी जिंदगी के बारे में लिखना आसान नहीं था। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा ने उन्हें किताब लिखने के लिए प्रेरित किया।

लंबे समय तक अपने निजी जीवन को सार्वजनिक चर्चा से दूर रखने के कारण संस्मरण लिखना उनके लिए कठिन था, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें लगा कि अपनी कहानी अपने शब्दों में कहना जरूरी है। उन्होंने पुस्तक को राजनीतिक किताब के बजाय एक व्यक्तिगत संस्मरण बताया है, जिसमें राजनीति, पृष्ठभूमि की तरह मौजूद है।

किताब को मिली प्रतिक्रिया पर सोनिया गांधी ने कहा कि लोगों ने जिस तरह स्नेह और अपनापन दिखाया है, उससे वह अभिभूत हैं।

उन्होंने कहा कि पाठकों की टिप्पणियों, किताब खरीदने में दिखाई गई दिलचस्पी और आलोचकों की प्रतिक्रियाओं ने भी उन्हें छुआ है। सोनिया गांधी ने आलोचना को जरूरी बताते हुए कहा कि कुछ टिप्पणियां काफी तीखी या खराब स्वाद वाली होती हैं, जबकि कुछ आलोचनाएं वास्तविक और ईमानदार होती हैं, जिनमें लोग साफ तौर पर बताते हैं कि उन्हें क्या सही लगा और क्या नहीं।

'बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव' के विमोचन कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी गुरशरण कौर और भाजपा नेता अमरिंदर सिंह भी मौजूद रहे। किताब 10 नवंबर को जारी हुई थी और जारी होने के बाद से इसे बाजार में काफी दिलचस्पी मिली है। हार्पर कॉलिन्स के मुताबिक संस्मरण की मांग तेज रही है, जबकि बुक स्टोर मालिकों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से भी मजबूत बिक्री के संकेत मिले हैं। विमोचन कार्यक्रम में विपक्ष के कई बड़े नेता पहुंचे हैं। इनमें तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी जोसेफ विजय, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला भी शामिल हैं।

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव भी कार्यक्रम में पहुंचे। उनके साथ उनकी पत्नी और पार्टी सांसद डिंपल यादव भी मौजूद हैं। सोनिया गांधी की किताब के विमोचन कार्यक्रम में कई बड़े नेता शामिल हो रहे हैं।

तीर्थराज पुष्कर का होगा कायाकल्प, विरासत के साथ जुड़ेगा आधुनिक विकास

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन से भव्य एवं दिव्य बनेगा तीर्थराज पुष्कर

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन से तीर्थराज पुष्कर आने वाले समय में नव्य, भव्य व दिव्य स्वरूप में दिखाई देगा। राज्य सरकार पुष्कर के पौराणिक विरासत को सहेजते हुए इसे आधुनिक रूप में विकसित करने की दिशा में ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर, पुष्कर सरोवर के घाटों एवं परिक्रमा मार्ग के विकास के मेगा प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही है। वहीं, श्रद्धालुओं और पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सड़क विकास से लेकर अन्य सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।

पुष्कर और आसपास के क्षेत्रों में आवागमन सुगम बनाने के लिए लगभग 42 करोड़ रुपये से अधिक के सड़क निर्माण, चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य करवाए गए हैं। इनमें पुष्कर-बड़ी घाटी सड़क, सुरजकुंड योजना, मोतीसर मार्ग, सावित्री मंदिर मार्ग और शहर के विभिन्न मार्गों के विकास के कार्य शामिल हैं। इसके अलावा 80 लाख रुपये की लागत से पुष्कर सरोवर के निकट उच्चस्तरीय पुल की मरम्मत और 1 करोड़ 33 लाख रुपये की लागत से भव्य स्वागत द्वार का निर्माण भी करवाया गया है। सावित्री माता मंदिर क्षेत्र में जलापूर्ति व्यवस्था को बेहतर करने के लिए 50 करोड़ रुपये के कार्य की स्वीकृति जारी की जा चुकी है। साथ ही, पुष्कर को क्लीन एंड ग्रीन इको सिटी के रूप में विकसित किए जाने के लिए डीपीआर बनाने का कार्य किया जा रहा है। पुष्कर की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता के साथ पर्यटन आकर्षण भी लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2023 में 76 लाख 42 हजार से अधिक घरेलू पर्यटक यहां पहुंचे। वर्ष 2024 में यह संख्या बढ़कर 1 करोड़ 24 लाख से अधिक तथा वर्ष 2025 में 1 करोड़ 32 लाख से अधिक हो गई। वर्ष 2025 में 68 हजार 327 विदेशी पर्यटक आए। वर्ष 2026 में अगस्त तक 70 लाख 88 हजार से अधिक घरेलू और 31 हजार 459 विदेशी पर्यटक पुष्कर पहुंचे।

हर वर्ष की भांति इस बार भी पुष्कर धार्मिक आस्था, लोक संस्कृति और ग्रामीण जीवन के विविध रंगों से देश-दुनिया को रूबरू करवाने के लिए तैयार है। आगामी 17 से 24 नवंबर तक आयोजित होने वाले मेले में विदेशी पर्यटकों की सहभागिता वाली खेल प्रतियोगिताएं, फूड एंड क्राफ्ट फेस्टिवल, ऊंट एवं घोड़ा नृत्य, लोक संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां विशेष आकर्षण रहेंगी। विदेशी पर्यटक राजस्थान के पारंपरिक ग्रामीण खेलों में स्थानीय प्रतिभागियों के साथ मुकाबला करते नजर आएंगे, तो शिल्पग्राम में प्रदेश के हस्तशिल्पियों के हुनर और पारंपरिक व्यंजनों की खुशबू महकेगी। 20 नवम्बर को शिल्पग्राम में फूड एंड क्राफ्ट फेस्टिवल का उद्घाटन होगा। इस आयोजन में हस्तशिल्प और खानपान से जुड़ी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। पुष्कर सरोवर की महाआरती, दीपदान और लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां मेले की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक छटा को और बढ़ाएंगी। पुष्कर में 4 करोड़ 93 लाख की लागत से सूरजकुंड योजना (चरण-1) में जीएसबी स्तर तक आंतरिक सड़क निर्माण कार्य, 3 करोड़ 68 लाख रुपये से अधिक लागत के साथ पुष्कर मेला मैदान रोड से मोतीसर तक, 2 करोड़ 39 लाख रुपये से अधिक की लागत से मोतीसर से सूरजकुंड योजना रोड तक सड़क चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण के कार्य किए गए हैं।



कोविड संकट में उद्धव नहीं उठाते थे फोन, अजित दादा सुबह 7 बजे रहते थे तैयार: शाह

पुणे में अजित पवार की प्रतिमा का किया अनावरण



पुणे (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुणे में महाराष्ट्र के पूर्व डिप्टी सीएम अजित पवार की प्रतिमा के अनावरण समारोह को संबोधित किया। उन्होंने इस दौरान उनसे जुड़े अपने लगाव और उनके कार्यशैली पर विस्तार से बात की। उन्होंने इस दौरान यह भी बताया कि आखिर क्यों अजित दादा महायुति में शामिल हुए। अमित शाह ने कहा 'दादा' का अचानक और असामयिक निधन एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। विशेष रूप से पुणे, बारामती, पिंपरी और चिंचवड़ क्षेत्रों के लिए। मुझे नहीं लगता कि अजित दादा के अ३चानक चले जाने से जो खालीपन पैदा हुआ है, उसे कभी भरा जा सकेगा।

अमित शाह ने कहा कि उनमें जिस तरह का साहस था वैसा साहस बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। कोविड दौर का जिक्र करते हुए अमित शाह ने कहा कि महाराष्ट्र की जनता से कुछ बात शेयर करना चाहता हूं कि जब कोविड आया तब अजित पवार सरकार में थे, भीषण संकट का समय था। कोविड की दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन की कमी ने माहौल भयावह बना दिया था। बीमारी से लड़ने के लिए दवाइयां नहीं थी।

गृह मंत्रालय के पास आपदा का काम आता है और हर राज्य के सीएम से मैं उन दिनों बात करता था। हालांकि, उन दिनों महाराष्ट्र के सीएम से बात नहीं हो पाती थी कोविड की दूसरी लहर के दौरान जब ऑक्सीजन का संकट था तब मैं तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को फोन करने की कोशिश करता था, लेकिन वे फोन तक नहीं उठाते थे। अमित शाह शाह ने आगे कहा, लेकिन जब भी मैंने 'दादा' को फोन किया तो आप सभी को हैरानी होगी कि वह सुबह 7 बजे सचिवालय में होते थे।

'आप इस कुर्सी के लायक नहीं', सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई से भिड़ा वकील



नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के कोर्ट रूम नंबर वन यानी देश के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) जस्टिस सूर्यकांत की अदालत में सोमवार को बड़ा बवाल देखने को मिला। दरअसल, सीजेआई के सामने पेश एक वकील उन्हीं पर भड़क उठा और उन्हें बेईमान करार दे दिया। यह तब हुआ, जब सीजेआई ने वकील से इंतजार करने को कहा और बोले, 'हम देखेंगे ', लेकिन वकील ने इंतजार करने से मना कर दिया। इसी बीच भड़के वकील ने कहा, आप इस कुर्सी पर बैठने के लायक नहीं हैं, आपमें ईमानदारी नहीं है। इसके बाद आनन-फानन में कोर्टरूम की कार्यवाही को म्यूट (आवाज बंद) कर दिया गया। कोर्ट के एसकॉर्ट गार्ड ने फिर उस वकील को वहां से जबरन बाहर किया। इससे पहले वकील ने सीजेआई से अपने मामले को तुरंत सुनने की गुहार लगाते हुए तहा कि उसे तुरंत सुनें क्योंकि उनका मामला बहुत अर्जेंट है, और ऐसा कहने के लिए उन्होंने शुरुआत में ही माफी मांग ली। जब यह नाटकीय घटनाक्रम हुआ, तब बेंच में सीजेआई सूर्यकांत के अलावा जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस वी. मोहना भी पीठासीन थे। आरोपी वकील ने अपने मामले की तत्काल सुनवाई की मांग करते हुए बेंच से कहा कि उनका मामला 2 नवंबर को मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय में रखा गया था, लेकिन 15 दिन बीत जाने के बाद भी उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने कहा, यह मामला 2 नवंबर को जस्टिस सूर्यकांत के कार्यालय में दिया गया था। 15 दिन बाद भी मुझे कोई जवाब नहीं मिला है। इसलिए मुझे इस कोर्ट के सामने आना पड़ा। हालांकि, उन्होंने अपनी बात कहते हुए शुरुआत में ही बिना उचित प्रक्रिया का पालन किए दोपहर 2 बजे इस मामले को उठाने के लिए माफी मांगी, और कहा कि वे एक आपातकालीन स्थिति के कारण ऐसा कर रहे हैं। इस बीच, जस्टिस वी. मोहना ने वकील से कहा, आप इस तरह से कोई बात नहीं रख सकते। वकील अपनी बात पर अड़े रहे और बोले, नहीं, मैं एक आपातकालीन स्थिति के कारण आया हूँ। मैं सबसे पहले माफी मांगना चाहता हूँ। कृपया आप बस ये कागजात देख लें।

झइस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने उस वकील से इंतजार करने को कहा और बोले, हम देखेंगे, आप बस थोड़ा इंतजार करें। इसी पर वो वकील भड़क उठे और सीजेआई के खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी करनी शुरू कर दी। उन्होंने कहा, नहीं, मैं इंतजार नहीं करूंगा। आप इस कुर्सी पर नहीं बैठ सकते, आप इसके लायक नहीं हैं। आपमें इसके लिए जरूरी ईमानदारी नहीं है!

सीआरपीएफ पोस्ट पर हमले के पांच दिन बाद दो आतंकी ढेर

लश्कर कमांडर लतीफ भट और उसका साथी उमर मारा गया, उमर का शव बरामद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले के लारू इलाके में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ के दौरान दो आतंकियों को मार गिराया। इनमें लश्कर-ए-तैयबा का कमांडर लतीफ भट और उसका साथी उमर शामिल बताया गया है। पांच दिन पहले सीआरपीएफ पोस्ट पर तैनात जवानों पर करीब 30 राउंड फायरिंग करने के मामले में दोनों की तलाश की जा रही थी। उस हमले में तीन जवान घायल हुए थे। कश्मीर जोन पुलिस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी देते हुए बताया कि मुठभेड़ में लतीफ भट और उमर मारे गए हैं।

सुरक्षा एजेंसियों ने उमर का शव बरामद कर लिया है, जबकि लतीफ का शव अभी नहीं मिला है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में लतीफ के घायल होकर किसी स्थान पर छिपे होने की आशंका जताई गई है। ऐसे में सुरक्षाबलों ने इलाके में तलाशी अभियान जारी रखा है। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, लतीफ भट इस वर्ष कुलगाम और अनंतनाग में हुई कई आतंकी वारदातों में शामिल था। इनमें अनंतनाग के लाल चौक में पुलिसकर्मियों की हत्या और कुलगाम में दो प्रवासी मजदूरों की हत्या की घटनाएं भी शामिल बताई गई हैं। उसे घाटी में सक्रिय लश्कर का प्रमुख कमांडर माना जा रहा था।



तीन घंटे चली मुठभेड़, स्कूलों से बच्चों को सुरक्षित निकाला- सेना के अधिकारी के अनुसार, आतंकियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर जम्मू-कश्मीर पुलिस और सुरक्षाबलों की संयुक्त टीम ने लारू इलाके में घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया। इस दौरान संदिग्ध ठिकाने के पास पहुंचने पर छिपे आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई के बाद दोनों ओर से मुठभेड़ शुरू हो गई। करीब तीन घंटे तक चली मुठभेड़ के बाद दोनों आतंकियों को मार गिराया गया। अभियान के दौरान एहतियात बरतते हुए सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ स्थल के आसपास स्थित स्कूलों से बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। इलाके में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और लतीफ की तलाश में सर्च ऑपरेशन जारी है।

अगस्त में लतीफ पर घोषित हुआ था 15 लाख का इनाम- सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, 5 अगस्त को लतीफ भट की तलाश के लिए श्रीनगर और दक्षिण कश्मीर में पोस्टर चस्पा कर 15 लाख का इनाम घोषित किया गया था। उस पर 22 जुलाई को अनंतनाग के लाल

दैनिक लोकजीवन
जयपुर एवं भीलवाड़ा से एक साथ प्रकाशित
संस्थापक - स्व. डॉ. शिवकुमार जी जिरोही

चीन से बढ़ता व्यापार घाटा, आत्मनिर्भरता की बड़ी चुनौती

राष्ट्रीय सेमीकंडक्टर मिशन और उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं के आक्रामक क्रियान्वयन के जरिए ही अगले कुछ वर्षों में घटकों के आयात में 30 से 40 प्रतिशत तक की महत्वपूर्ण कमी लाई जा सकती है। व्यापार घाटे को कम करने की दिशा में दूसरा सबसे निर्णायक कदम फार्मास्यूटिकल्स और बल्क ड्रग क्षेत्र में 100 प्रतिशत आत्मनिर्भरता हासिल करना है। यद्यपि भारत को दुनिया की फार्मेसी कहा जाता है, लेकिन भारतीय जीवनरक्षक दवा उद्योग का अपने कच्चे माल (एपीआई) के लिए 70 प्रतिशत तक चीन पर निर्भर रहना एक बहुत बड़ा रणनीतिक और राष्ट्रीय सुरक्षा का जोखिम है।

इस संवेदनशील निर्भरता को समाप्त करने के लिए देश में घोषित बल्क ड्रग पार्कों की स्थापना में तेजी लानी होगी और 41 अति-महत्वपूर्ण एपीआई के घरेलू उत्पादन के लिए प्रोत्साहन ढांचे को धरातल पर उतारना होगा। इसके साथ ही, चीन द्वारा लगाई गई गैर-शुल्क बाधाओं का मुकाबला करने के लिए भारत को कूटनीतिक दबाव बनाने के साथ-साथ अपने देश में सख्त 'क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर' (क्यूसीओ) लागू करने होंगे। भारत में घटिया और अमानक चीनी सामान की डंपिंग को रोकने के लिए कड़े मानक तय करना बेहद जरूरी है जिससे घरेलू विनिर्माताओं को एक सुरक्षित और न्यायसंगत प्रतिस्पर्धी माहौल मिल सके। रणनीतिक दृष्टि से भारत के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं का व्यापक विविधीकरण और 'फ्रेंड-शोअरिंग' की नीति को अपनाना जरूरी है। क्रिटिकल मिनरल्स, दुर्लभ धातुओं और उच्च-तकनीकी इनपुट के लिए चीन के एकल प्रभुत्व को तोडने हेतु भारत को समान विचारधारा वाले मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर मजबूत वैकल्पिक आपूर्ति नेटवर्क तैयार करना होगा। जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और यूरोपीय संघ के देशों के साथ द्विपक्षीय व बहुपक्षीय मिनरल सिक्योरिटी पार्टनरशिप को व्यावहारिक रूप देना होगा। विनिर्माण के मोर्चे पर इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स और ग्रीन टेक्नोलॉजी जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में तुलनात्मक रणनीति बनाकर काम करना होगा। ग्रीन टेक और ई-व्हीकल क्रांति के इस दौर में यदि भारत ने अभी से स्थानीय विनिर्माण को मजबूती प्रदान नहीं की, तो जीवाश्म ईंधन की मध्य-पूर्व पर निर्भरता समाप्त होकर केवल चीन के ग्रीन-आयात की नई निर्भरता में बदल जाएगी। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि चीन से बढ़ता व्यापार घाटा केवल आयात-निर्यात का एक साधारण आर्थिक आंकड़ा मात्र नहीं है, बल्कि यह भारत की दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता, औद्योगिक क्षमता और रणनीतिक संप्रभुता से जुड़ा हुआ एक अत्यंत संवेदनशील विषय है। भारत सरकार द्वारा अपनाया गया यह रुख सर्वथा तर्कसंगत और व्यावहारिक है कि वह केवल प्रतिशोधात्मक शुल्क लगाने जैसे अल्पकालिक उपायों के बजाय बहुपक्षीय बातचीत, कूटनीतिक दबाव और अपनी आंतरिक घरेलू विनिर्माण क्षमताओं के विस्तार का दीर्घकालिक रास्ता चुन रही है। आने वाले वर्षों में चीन से व्यापार असंतुलन कम करने के लिए हमें और अधिक रणनीतिक प्रयास करने होंगे। इस रणनीतिक काम के लिए देश के उद्यमियों-कारोबारियों, वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों और अन्य विभिन्न क्षेत्रों के सभी लोगों को एकजुटता, परिश्रम व समर्पण के साथ आगे बढना होगा। देश के करोड़ों उपभोक्ताओं द्वारा भी घरेलू और स्वदेशी वस्तुओं की खरीद को दैनिक जीवन की प्राथमिकता बनाया जाना होगा। हमें चीन को एक आर्थिक प्रतिस्पर्धी देश मानते हुए उसके साथ आर्थिक प्रतिस्पर्धा के लिए हरसंभव प्रयास करने होंगे। चीन से व्यापार घाटे को पाटने के लिए जल्द ही ठोस उपाय करने होंगे। हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक की बैठक के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारत इस समय चीन के साथ तेजी से बढ़ते व्यापार घाटे की गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। सीतारमण ने कहा कि चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा वित्त वर्ष 2015-16 के 52.5 अरब डॉलर से दो गुना से अधिक बढक़र वित्त वर्ष 2025-26 में 112 अरब डालर हो गया है। यद्यपि चीन को होने वाले भारतीय निर्यात में सराहनीय वृद्धि दर्ज की गई है, परंतु चीन से भारत आने वाले आयात का विशाल परिमाण व्यापार घाटे की खाई को और अधिक गहरा बना रहा है। ऐसे में हमें हरसंभव तरीके से चीन से कारोबार में आ रही अड़चनें दूर करते हुए चीन को निर्यात बढ़ाने की नई रणनीति के साथ आगे बढना होगा। उल्लेखनीय है कि चीन के साथ लगातार बढ़ते हुए व्यापारिक असंतुलन के पीछे कई संरचनात्मक, रणनीतिक और नीतिगत कारक जिम्मेदार हैं। सबसे बड़ा कारण चीन द्वारा अपनाई जाने वाली अप्रत्यक्ष और गैर-शुल्क बाधाएं (नॉन टैरिफ बैरियर्स) हैं। वित्त मंत्री के अनुसार चीनी प्रशासन द्वारा लगाए जाने वाले अत्यधिक जटिल तकनीकी, कड़े स्वास्थ्य और गुणवत्ता संबंधी सूक्ष्म मानक भारतीय वस्तुओं के चीनी बाजार में प्रवेश के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा बने हुए हैं। भारत बीते एक दशक से भी अधिक समय से अपनी विश्वस्तरीय जेनेरिक दवाओं, प्रसंस्कृत मांस और विविध कृषि उत्पादों के लिए चीनी बाजार में न्यायसंगत और पारदर्शी पहुंच की मांग करता रहा है। इसके विपरीत चीन अपने घरेलू उद्योगों और बाजार को पूर्ण संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से ऐसे जटिल नियामक नियम लागू करता है जिनके चलते भारतीय निर्यातक प्रतिस्पर्धी मूल्य और उच्च गुणवत्ता होने के बावजूद वहां अपनी पैठ नहीं बना पाते।

मीडिया से 55 साल का संबंध, मर्यादाओं में रहकर निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता करें -विधानसभा अध्यक्ष

- देवनानी ने राजस्थान पत्रकार परिषद के दीपावली स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह में की सहभागिता - वरिष्ठ पत्रकारों का किया सम्मान

जयपुर (कासं)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि उनका मीडिया से 55 सालों का संबंध है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को मर्यादाओं में रहकर निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता करनी चाहिए। पत्रकारिता लोकतंत्र की शक्ति है।

संसद और विधानसभाओं में लिए गए निर्णयों का दस्तावेजीकरण संवैधानिक इतिहास का निर्माण करता है, वहीं पत्रकारिता उन निर्णयों के पीछे के विचारों, परिस्थितियों और जनभावनाओं को समाज के सामने सुरक्षित रखती है। पत्रकारिता लोकतंत्र के वर्तमान का चित्रण करने के साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए समय का प्रमाण भी प्रस्तुत करती है। देवनानी ने कहा कि लोकतंत्र में असहमति का भ ी सम्मान होता है। उन्होंने कहा कि संवैधानिक संस्थाओं के प्रति श्रद्धा बनी रहनी चाहिए।

स्पीकर वासुदेव देवनानी सोमवार को विद्याधर नगर में राजस्थान पत्रकार परिषद के दीपावली स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह को शुभारम्भ किया। देवनानी ने वरिष्ठ पत्रकारों का साफा पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। देवनानी ने कहा कि कलम की ताकत का वास्तविक परिचय उसके प्रभाव से मिलता है। एक समाचार किसी उपेक्षित गांव की समस्या को शासन तक पहुंचा सकता है, किसी पीड़ित के मन में न्याय की उम्मीद जगा सकता है और किसी सकारात्मक प्रयास को देशव्यापी पहचान दिला सकता है। पत्रकारिता की सार्थकता जनहित के प्रश्नों को प्रभावी ढंग से सामने लाने और समाज को सही दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करने में निहित है। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन पत्रकारिता के योगदान के बिना अधूरा है।

राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी और गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान व्यक्तित्वों ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय जागरण, जनचेतना और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाया। उनके विचार और लेखन आज भी पत्रकारिता की मूल प्रेरणा बने हुए हैं। देवनानी ने कहा कि संसदीय पत्रकारिता लोकतंत्र की कार्यप्रणाली को नागरिकों के निकट लाती है। सदन में होने वाली बहस, विधेयकों की भावना, जनप्रतिनिधियों के विचार और जनहित में लिए गए निर्णय जब पत्रकारिता के माध्यम से जनता तक पहुंचते हैं, तब संसदीय विमर्श व्यापक सामाजिक संवाद का हिस्सा बनता है।



संवैधानिक संस्थाओं के प्रति सम्मान, उनकी कार्यप्रणाली की समझ और लोकतांत्रिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने कहा कि डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता के स्वरूप और गति में व्यापक परिवर्तन किया है। आज समाचार कुछ ही क्षणों में वैश्विक संवाद का हिस्सा बन जाता है। ऐसे समय में सूचना की शीघ्रता के साथ उसकी सत्यता, विश्वसनीयता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करना और भी आवश्यक हो गया है।

देवनानी ने ग्रामीण पत्रकारिता को लोकतंत्र की जमीनी संवेदना बताते हुए कहा कि दूरस्थ गांवों में कार्यरत पत्रकार स्थानीय समस्याओं, किसानों की अपेक्षाओं, विकास योजनाओं की वास्तविक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन से जुड़े विषयों को सामने लाकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को जनसामान्य से जोड़ते हैं। महिला पत्रकारों की सहभागिता और अधिक बढ़नी चाहिए। उनकी सक्रिय भागीदारी से पत्रकारिता में नए दृष्टिकोण, व्यापक संवेदनशीलता और सामाजिक प्रश्नों की बेहतर अभिव्यक्ति सुनिश्चित होगी। कार्यक्रम को विधायक कालीचरण सराफ, मेयर सुनिल कोठारी, और परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलविंदर सिंह जम्मू ने भी सम्बोधित किया। राजस्थान पत्रकार परिषद के अध्यक्ष रोहित सोनी ने स्वागत किया। परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष गिरिराज अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पत्रकारिता एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनिल लोढ़ा, गुलाब बत्रा, महेश शर्मा, महेश झालानी, योगेश जैमन, सत्यनारायण शर्मा, सुरेंद्र जैन पारस, अजीत तिवारी, पुरुषोत्तम सैनी, जगदीश जैमन, गिरिराज जैमन, वीरेंद्र सिंह राठौड़ और राजेन्द्र हंस का सम्मान किया गया।

फर्जी सिम और साइबर ठगी रोकने में तंत्र की नाकामी, अब गलत इस्तेमाल पर मूल ग्राहक को भी जिम्मेदार ठहराने की तैयारी

आधुनिक तकनीक एवं प्रौद्योगिकियों में भारत से अधिक उन्नत अमेरिका, चीन एवं अन्य देशों में ऐसे कार्यक्रम 10-15 वर्षों से भी बहुत पहले से आरंभ हैं। भारत के संदर्भ में देखें तो दूरसंचार सेवा के व्यक्तिगत उपयोग के लिए मोबाइल फोन, सिम कार्ड तथा दोनों संसाधनों के क्रयार्थ व्यक्तिगत पहचान-पत्रों की आवश्यकता होती है। दोनों ही संसाधनों पर व्यक्ति का धन व्यय होता है। इन दोनों के संयुक्त हो जाने पर प्राप्त होने वाली दूरसंचार एवं बहुसंचारण सेवाओं के लिए व्यक्तियों को अपने प्रामाणिक पहचान-पत्र सेवा प्रदाता कंपनियों एवं उनके खुदरा व्यापारियों के पास जमा करने होते हैं। सिम कार्ड से संचालित मोबाइल फोन के नंबर व्यक्तियों के बैंक खातों से भी जुड़ चुके हैं। ऐसे में ऑनलाइन एवं साइबर ठगी का एक गोपनीय तंत्र भी देश-दुनिया में बुरी तरह से सक्रिय रहा है और अब भी सक्रिय है, जिस पर लाख प्रयासों के बाद भी भारत एवं अन्य देश स्थायी नियंत्रण करके उसे समाप्त नहीं कर पाए हैं। यह तंत्र देश के सज्जन नागरिकों को ऑनलाइन ठगी के जाल में फांसता है। ऐसे अनेक प्रकरण देश में पहले ही घटित हो चुके हैं। किंतु दुर्भाग्य से इस पर स्थायी नियंत्रण की दिशा में शासन के अभियान विफल ही सिद्ध हुए हैं। ऑनलाइन ठगी का सबसे विलक्षण तरीका है, दूरसंचार सेवा पाने के लिए दूरसंचार कंपनियों के मूल एवं फुटकर सेवा प्रदाताओं के पास सिम खरीद हेतु जमा किए गए व्यक्तियों के विभिन्न पहचान-पत्र, जिन्हें चोरी किया जाता है। लोकतंत्र का यह अर्थ तो कदापि नहीं हो सकता है कि आम लोगों को सरकारी कामों का भी उत्तरदायित्व सौंप दिया जाए। लोकतंत्र की बातें ही बातें होती रही हैं, मगर अभी तक तंत्र करदाताओं के रूप में उपस्थित लोगों की सुविधा नहीं बन सका है। यह लोकतंत्र की सबसे बड़ी विभीषिका है। यह कैसी विडंबना है कि हिंदू समाज का प्रत्येक परिवार तो अधिक से अधिक एक या दो ही बच्चों तक सीमित है, किंतु पूरे देश की जनसंख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है। यह विरोधाभास न केवल लोकतंत्र अपितु लोकतंत्रगत अनेक नीतियों के समुचित संचालन के लिए बड़ी बाधा है। दुर्भाग्य से इस दिशा में तंत्र के सभी कार्यकारी स्तंभ विचारशून्य हैं। भारतीय तंत्र की ऐसी ही एक विरोधाभासी नीति है डिजिटल इंडिया। पहले धीरे-धीरे और तीव्रतापूर्वक यह नीति दासता की समस्या बन चुकी है। गत 21 सितंबर 2026 को शासन के दूरसंचार विभाग ने फर्जी तरीके से सिम जारी करने, दूरसंचार पहचान संख्या यानी मोबाइल नंबर के गलत इस्तेमाल और मोबाइल के आईएमईआई नंबर से छेड़छाड़ को लेकर एक सार्वजनिक परामर्शिका जारी की। विभाग के अनुसार ऐसे प्रकरणों में दंड के रूप में 3 वर्ष तक का कारावास और 50 लाख रुपए तक अर्थदंड हो सकता है, इसलिए उपभोक्ता अपने स्तर पर भी सावधानी बरतें। यह परामर्शिका विभाग ने तब निकाली जब मध्य प्रदेश लाइसेंस सेवा क्षेत्र में फर्जी तरीके से सिम जारी किए जाने से संबद्ध एक प्रकरण का पता चला। इस प्रकरण में साइबर अपराध का संदर्भ लेकर की गई जांच में ज्ञात हुआ कि छत्तीसगढ़ में एक 'प्वाइंट ऑफ सेल एजेंट' ने नागरिकों के दस्तावेजों का उनकी जानकारी और सहमति के बिना इस्तेमाल कर 25 मोबाइल कनेक्शन जारी कर दिए। इसके बाद दूरसंचार विभाग और संबंधित दूरसंचार कंपनियों ने पीओएस एजेंट को कालीसूची में डाल दिया। इस घटना के पश्चात दूरसंचार विभाग ने कुछ सभी के लिए कुछ सतर्कता निर्देश जारी किए हैं। फर्जी दस्तावेज पर सिम न लें। अपने नाम पर जारी सिम किसी दूसरे व्यक्ति को न दें, बेचें अथवा किराये पर न दें। तीन, साइबर अपराध, गैर-कानूनी गतिविधि के लिए सिम उपलब्ध न कराएं। चार, आईएमईआई नंबर में परिवर्तन करने वाले उपकरणों का इस्तेमाल न करें। पांच, मोबाइल एप, वेबसाइट या किसी अन्य माध्यम से कॉलिंग लाइन आइडेंटिटी (सीएलआई) या अन्य दूरसंचार पहचान संख्या में बदलाव न करें। संचार साथी से सिम की जांच करें। नागरिक पर जाकर इन सुविधाओं का इस्तेमाल कर सकते हैं अथवा संचार साथी मोबाइल एप डाउनलोड कर सकते हैं। ऐसे दिशानिर्देश जारी करते हुए दूरसंचार विभाग ने जो विचित्र घोषणा की है वो यह है कि सिम के गलत इस्तेमाल पर मूल ग्राहक भी उत्तरदायी होगा। इस घोषणा से सिद्ध हो गया है कि इस देश का आम नागरिक पूरी तरह डिजिटल दासता से घिर चुका है।

ऐसे में जब नागरिकों के मोबाइल फोन पर अनेक एप्स डाउनलोड हैं और इच्छा के साथ अथवा विवशतापूर्वक वह विभिन्न सेवाओं के लिए इनका इस्तेमाल कर रहा है, तो इनके प्रौद्योगिकीय संचालन, पासवर्ड, कीवर्ड, आईडी व अन्य पहचानों की व्यक्तिगत सुरक्षा, गोपनीयता एवं निजता वह कैसे प्रबंधित करेगा।

वर्तमान में देश का हरेक आम नागरिक तो सॉफ्टवेयर या एप्स की एचटीएमएल यानी कूट भाषा का विशेषज्ञ नहीं है, जो वह साइबर ठगों द्वारा अपने मोबाइल फोन के नंबरों या किसी एप्स के पासवर्ड या अन्य कीवर्ड के गलत इस्तेमाल की पूर्व जानकारी, पूर्व सूचना व पूर्वाभास प्राप्त कर लेगा। जब मोबाइल फोन के माध्यम से व्यक्तियों के व्यवसाय, बैंक, पहचान, गैस, स्कूल, कॉलेज तथा अन्य क्षेत्रों की जानकारी इंटरनेट की सार्वजनिक दुनिया में उपलब्ध है, तो साइबर ठगों से साधारण व्यक्ति साइबर विशेषज्ञ हुए बिना कैसे सुरक्षित हो सकता है! मोबाइल फोन पर वीडियो तथा अन्य चीजें देखने, सुनने एवं अपनाने की आदत तो शासन ने लोगों को उनकी अनुमति-सहमति के बिना लगा ही दी है। बाकायदा इसके लिए लोगों से अधिक शुल्क वसूल किया जाता है। ऐसी आदत के बाद लोगों की स्मृति कमजोर हो रही है। उनकी स्मरणशक्ति दिन-प्रतिदिन कम हो रही है। डिजिटल दासता से घिरकर अपनी ऐसी स्थिति में भला आम आदमी साइबर ठगी के प्रति उस स्तर का जागरूक व्यक्ति कैसे हो सकता है, जैसे शासन उससे अपेक्षा कर रहा है! तंत्र में दूरसंचार विभाग के शासन का यह कैसा खेल है, जिसमें वह अपने संचालन हेतु प्रतिनिधियों अर्थात नेताओं के चुनाव के लिए तो लोकसभा से लेकर विधानसभा तक के चुनाव करवाता है, किंतु अपने चुनावी घोषणापत्रों के अतिरिक्त, आकस्मिक रूप से बनने वाली नीतियों के निर्माण व क्रियान्वयन के लिए कभी भी जनता की सलाह, सहमति या अस्वीकृति का देशव्यापी अभियान नहीं चलाता है। उदाहरण के लिए जब देश में दूरसंचार की नीति बनी और इसका क्रियान्वयन आरंभ हुआ तो जनता से इस बारे में कुछ नहीं पूछा गया कि उन्हें दूरसंचार की अवसंरचना चाहिए अथवा नहीं। भौतिक वस्तुएं एवं सेवाएं प्राप्त करने के लिए लालायित जनता, दीर्घावधि में प्रकट ऐसी वस्तुओं एवं सेवाओं के नवोन्त वैज्ञानिक रूप के व्यक्ति, परिवार व समाज पर पडने वाले दुष्प्रभावों से अनभिज्ञ होती है। ऐसा ही दूरसंचार सेवा के विषय में भी हुआ। आज दूरसंचार सेवा केवल संदेश सेवा तक ही सीमित नहीं रही। यह मोबाइल फोन के माध्यम से बहुसंचारक प्रणाली में परिवर्तित हो चुकी है।

सोशल मीडिया, पेड कंटेंट और एआई के दौर में फर्जी खबरों की पहचान कठिन; पाठकों और पत्रकारों को तथ्य जांचने की प्रक्रिया अपनानी होगी

खबरों की जांच करने के लिए पहला कदम होना चाहिए, उसके स्रोत की खोज। खबरें किस तरह से आ रही हैं, कहां से आ रही हैं और क्या उसके साथ कोई सार्थक नाम भी है? अगर खबर के स्रोत का पता चल जाता है तो फिर उसकी सच्चाई भी उजागर हो जाती है। वह खबर किसी समाचार एजेंसी की है या फिर किसी जाने-माने समाचार पत्र-पत्रिका या टीवी चैनल की है तो फिर बात बन जाएगी। खबर के स्रोत का ध्यान रखना जरूरी है। इसी से उसकी प्रामाणिकता की जांच होती है। सोशल मीडिया पर सैकड़ों छोटे-छोटे चैनल हैं जो खबरें परोसते हैं। उन सभी का एक ही उद्देश्य होता है, अधिक से अधिक व्यू लेना। वे इसके लिए जाल बुनते हैं, खबरों को सनसनीखेज बनाते हैं और चटकारे लेने के अंदाज में या चौंकाने वाले अंदाज में उन्हें पेश करते हैं। कुछ चैनल 'शूट एंड स्कूट' के जरिये व्यूज बटोरते हैं। इसमें कोई झूठी खबर फैला दी जाती है और बाद में उसे हटा दिया जाता है। तब तक वह खबर वायरल हो जाती है और यूट्यूबर अथवा चैनल चलाने वाले का मकसद पूरा हो जाता है। किसी जमाने में इस तरह की खबरें पेश करने वालों को अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता था और ऐसी पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते थे। ऐसी खबरों पर यकीन करने के पहले उसके स्रोत को जरूर जान लें। ये किसी खास मंशा से परोसी जाती हैं। कोरोना काल में ऐसी सैकड़ों खबरें फैलाई जा रही थीं जिनका सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं था। कई दवाइयों के नाम फैलाये जा रहे थे और कहा जा रहा था कि इनसे कोरोना रुक सकता है या मरीज ठीक हो सकता है। इसमें बाबा रामदेव की दवा कोरोनिल भी थी जिसके लिए उन्हें काफी लानत-मानत झेलना पड़ा था। प्राकृतिक आपदा के उस कठिन समय में यह साबित करना बड़ा मुश्किल था कि यह खबर सच्ची है या फिर ये दवा अच्छी है। तरह-तरह के दावे पेश किए जा रहे थे और समाचार पत्रों के लिए सच का पता लगाना कठिन होता जा रहा था। लेकिन उस समय भी कई समाचार पत्रों ने बहुत बढिया कार्य किया और दूध का दूध, पानी का पानी कर दिखाया।

उन्होंने सोशल मीडिया पर छाई हुई खबरों को सही ढंग से समझा और फर्जी खबरों तथा दावों को उजागर किया। खबरों को पढक़र स्वविवेक से भी थोड़ा बहुत जाना जा सकता है कि इसमें सच्चाई कितनी है। सोशल मीडिया पर बहुत सी खबरें फ्लैशी होती हैं। थोड़े से प्रयास से पता चल जाता है कि ये फर्जी हैं और किसी उद्देश्य विशेष से परोसी गई हैं। व्यूज लेने के अलावा सोशल मीडिया में अपना एजेंडा चलाने के आतुर लोग भी खबरें डालते हैं।

इसमें राजनीतिक दल के लोग, उनके समर्थक और पेड यूट्यूबर बड़ी संख्या में शामिल हैं। अभी हाल ही में एक खुलासा हुआ जिसमें यूपी के एक बड़े नेता के पक्ष में इंस्टाग्राम में संबंधित खबरें चलाने के लिए कई सोशल मीडिया हैंडलर ने अपनी-अपनी फीस बता दी। इससे यह तो पता चल गया कि सोशल मीडिया पर ज्यादातर सामग्री पेड है।

इसकी खबरों पर विश्वास करना जोखिम भरा हो सकता है। वहां पक्षपातपूर्ण खबरें भी हैं और पेड खबरें भी हैं। बड़ी मासूमियत से लिखी हुई खबरें भी हैं जो सीधे दिमाग में उतर जाती हैं। इसलिए वहां पूरी सावधानी की जरूरत है। खोजी गूगल जो दुनिया का सबसे बड़ा सर्च इंजिन है, बहुत विश्वसनीय नहीं माना जाता है लेकिन नए मेटा पर आप काफी हद तक विश्वास कर सकते हैं क्योंकि यह गहराई में जाकर खबरें बताता है। यह अपने स्रोत भी बताता है जिससे खबर की प्रामाणिकता का पता चलता है।

स्मार्टफोन और 5 जी इंटरनेट के इस युग में इस माध्यम का इस्तेमाल करना एक बढिया तरीका है। इंटरनेट पर सभी बड़े अखबार और समाचार एजेंसियां सक्रिय हैं जो आपको पल-पल की खबरें देती रहती हैं। इंस्टाग्राम या यूट्यूब पर आपको कोई ऐसी कोई खबर दिखे तो फौरन उपरोक्त तरीका अपनाएं, सच्चाई उजागर हो जाएगी। झूठी खबरें खोटे सिक्कों की तरह होती हैं जो जल्दी चल जाती हैं। इस कारण से कई मीडिया हाउसेज ने फर्जी खबरों की जांच के लिए व्यवस्था कर रखी है।

भारत सरकार के प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ने भी फैक्ट चेक के लिए एक विशेष इकाई बना रखी है। उसने सैकड़ों झूठी खबरों का पर्दाफाश भी किया है। एआई की उत्पत्ति से जितने फायदे हुए हैं उससे कम नुकसान भी हुए हैं। कई तरह की खबरें लिखी जा रही हैं और उनके साथ ऐसे चित्र लगाए जा रहे हैं जो हूबहू लगते हैं। ऐसे में समाचार पत्रों के संवाददाताओं के लिए बड़ी समस्या खड़ी हो रही है।

उनके लिए यह तय करना कि कौनसी खबर फर्जी है और कौन असली, कठिन चुनौती है। उनके पास समय का अभाव होता है क्योंकि उन्हें कई सारी खबरें एक निश्चित समय पर फाइल करनी होती है। इसमें गलती होने की गुंजाइश रहती है। यह स्वाभाविक सी बात है और ऐसी स्थिति में वह कर भी क्या सकता है।

इन दिनों पत्रकारों के लिए भी यह पता लगाना मुश्किल होता जा रहा है कि कौनसी खबर सही या प्रामाणिक है और कौन फर्जी। कई बार तो सच्ची खबरें ऐसी लगती हैं कि फर्जी हैं जबकि फर्जी खबरें असली लगती हैं।

इसका कारण यह है कि वे दिमाग पर तेजी से असर डालती हैं, उनमें चौंकाने वाले तत्व होते हैं और वे लिखी भी ग्राह्य ढंग से जाती हैं। ऐसी खबरों के कारण समाचार पत्रों के संपादकों को यह समस्या होती है कि वे उन्हें पहचानें कैसे? कौनसी खबर फर्जी या झूठी है, यह जानना कठिन हो जाता है। पाठक के लिए तो ये खबरें बिल्कुल प्रामाणिक सी लगती हैं और वे उन पर सहज विश्वास भी कर लेते हैं। ऐसी खबरें काफी समय तक प्रामाणिक या सच बनकर मीडिया के ब्रह्मांड में घूमती रहती हैं और उस विषय से संबंधित सच्ची खबरों की काफी समय तक उपेक्षा की जाती रहीं।

ऐसा नहीं है कि यह स्थिति भारत में ही है, बल्कि सारी दुनिया इस बीमारी से जूझ रही है और असल तथा नकल में पहचान करना मुश्किल होता जा रहा है। ये खबरें इतनी विश्वसनीय ढंग से पेश की जाती हैं कि उन्हें सच्चा मानना ही पड़ता है। इससे समाज को बहुत नुकसान होता है, विश्वसनीयता का संकट खड़ा हो जाता है।

कोरोना काल में हमने देखा कि हजारों समाचार हमारे सामने आ रहे थे और हम जाने-अनजाने में उन पर विश्वास कर रहे थे। अखबारों, टीवी चैनलों, न्यूज वेबसाइटों के लिए बड़ी संकटपूर्ण स्थिति थी। उस दौरान जब हालात ऐसे नहीं थे कि संवाददाता बाहर निकल कर हमेशा रिपोर्टिंग करे, तो ऐसे में चारों ओर से फर्जी खबरें आ रही थीं।

उन्हें प्रमाणित मान लिया जाता था और उस पर सभी आंखें मूंदकर विश्वास कर लेते थे। यूट्यूब के जमाने में तो यह बीमारी और भी बढ़ गई है। खबरों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करना तो आम बात हो गई है। ऐसे विश्वास और लहजे में खबरें पेश की जा रही हैं कि उन्हें सच मानना ही पड़ता है। लेकिन जब सच्चाई पता चलती है तब तक देर हो चुकी होती है। कोरोना काल में ऐसी स्थिति से निबटने के लिए तीन संस्थाओं ने हाथ मिलाया और कुछ नुस्खे भी पेश किए क्योंकि उन्हें लग रहा था कि इनसे जान का संकट पैदा होने लगा है।

ये संस्थाएं थीं- ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, थॉमसन रॉयटर्स, आईएमसी और यूनिसेफ। पहली दोनों संस्थाओं ने कुछ फॉर्मूले बताए और खबरों, खासकर स्वास्थ्य संबंधी खबरों की सच्चाई जानने के लिए मानक तैयार किया जिन पर उतर कर ही कोई खबर प्रमाणिक मानी जा सकती थी। यूनिसेफ ने जो बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य से जुड़ी हुई है, इसका प्रचार-प्रसार किया। इन्हें क्रिटिकल ऐप्रेजल स्किल्स (सीएएस) कहा गया।

हालांकि ये स्वास्थ्य संबंधी खबरों के लिए तैयार किए गए थे, लेकिन इनका उपयोग आम समाचारों के लिए भी किया जा सकता है और किया भी जा रहा है।

दरअसल ये बहुत तार्किक ढंग और समझदारी से बनाए गए हैं जिनमें व्यावहारिकता है। कोई भी फॉर्मूला अगर व्यावहारिक न हो तो वह सफल नहीं होगा।

व्यायाम और खेलकूद से स्वस्थ्य

जीवन

व्यायाम और खेलकूद स्वस्थ्य जीवन शैली के मूलाधार हैं। शारीरिक श्रम करने से एक ओर जहां हमारे मसल्स मजबूत होते हैं, वहीं दूसरी ओर दिल (हृदय) भी स्वस्थ और मजबूत बना रहता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी नहीं कि हम किसी एथलीट की तरह कोई खास एक्सरसाइज करें। यदि आप दोस्तों के साथ बातचीत करते हुए रोज आधे घंटे टहलते हैं तो भी बहुत बड़ा फर्क देख सकते हैं। अच्छा होगा कि आप कोई भी एक्सरसाइज शुरू करने से पहले अपने डॉक्टर या हेल्थ कंसल्टेंट से संपर्क जरूर करें।



एरोबिक्स

एक स्वस्थ दिल के लिए, विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि सप्ताह में कम-से-कम एक दिन 30 मिनट तक एरोबिक एक्सरसाइज करें। जॉगिंग करना, दौडऩा, साइकिल चलाना आदि एरोबिक एक्सरसाइज में शामिल है।

सीढ़ी चढऩा:

यह ऐसी गतिविधि है जिसे घर पर या अपने वर्कप्लेस (कार्यस्थल) दोनों जगह किया जा सकता है। यह भी एक तरह की एरोबिक एक्सरसाइज ही है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी एरोबिक एक्सरसाइज से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए आपके दिल की धडक़न (हार्टबीट) को सामान्य से अधिक 50 और 85 फीसदी तक बढ़ा सकते हैं।

ताई ची:

गहरी सांस, एकाग्रता और लयबद्ध शारीरिक गतिविधियों के जरिये ताई ची का अहम हिस्सा हैं। ताई ची तनाव कम करने और दिल को मजबूत बनाने के लिये कारगर नुस्खा है।

डांसिंग

दिल को मजबूत रखने के लिये डांसिंग सबसे अच्छी और रोचक एक्सरसाइज है। जो लोग कार्डियावेस्कुलर बीमारियों से ग्रसित हैं, उनके लिये ये सबसे बेहतरीन एक्सरसाइज है। हालांकि ये आप पर निर्भर है कि इसका कितना अभ्यास करना है। प्रति मिनट 120 से 135 बीट को अच्छी एरोबिक बीट माना जाता है।

सोने की अपेक्षा के हैं कई फायदे



कपड़े पहनकर सोने की अपेक्षा नग्न सोना सेहत के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित होता है। इस बात का दावा स्वास्थ्य से जुड़े विशेषज्ञों ने किया है। सेहत से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि नग्न सोना शरीर का तापमान को नियंत्रित करने में मदद करता है और आप रात में अच्छी नींद ले पाते हैं।

'डेली मेल' की रिपोर्ट के मुताबिक नेशनल स्लीप फाउंडेशन के पोल के अनुसार अमेरिका में केवल 8 फीसदी लोग ही नग्न होकर सोना पसंद करते हैं। 'मेन्स हेल्थ' की नींद से जुड़े परामर्शदाता डब्ल्यू क्रिस्टोफर विंटर (एमडी) का कहना है कि आपके शरीर का तापमान पूरी रात कम-ज्यादा होता रहता है। जैसे ही आप नींद की आगोश में जाते हैं आपका शरीर ठंडा पडऩे लगता है और जैसे-जैसे आप जगने के करीब आते जाते हैं आपका शरीर धीरे-धीरे गर्म होने लगता है। विंटर का कहना है कि आपके शरीर का तापमान गिरने पर रात के समय पहने गए कपड़े आपको गर्म महसूस होने लगते हैं जिसके चलते आप

रिपोर्ट के मुताबिक नेशनल स्लीप फाउंडेशन के पोल के अनुसार अमेरिका में केवल 8 फीसदी लोग ही नग्न होकर सोना पसंद करते हैं।

करवट बदलने लगते हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि बिना कपड़ों के सोने के कई फायदे हैं। पत्रिका 'डॉयबिटीज' में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक नग्न सोने से वजन कम करने में मदद मिलती है। 'मेन्स हेल्थ' के अनुसार गहरी नींद आपकी उपापचय (मेटाबोलिज्म) को तेज करने के साथ ही आपके गर्दन में एकत्रित ब्राउन फैट की उत्पादकता को बढ़ता है। यह ब्राउन फैट आपके शरीर को गर्म करने के लिए कैलोरिज बर्न करता है।

न्यू जर्सी के अटलांटिक सिटी के यूरोलोजिस्ट ब्रायन स्टेक्सिनर का कहना है कि नग्न होकर सोने से निजी अंगों की सुरक्षा होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि पायजामा और अन्त: वस्त्र अपने अंदर गर्मी और नमी को बनाए रख सकते हैं। इससे बैक्टीरिया के उत्पन्न होने का खतरा बना रहा है। पुरुष और महिला दोनों यदि हवादार जगह पर सोते हैं तो उनके जननांग ज्यादा स्वस्थ होते हैं। 'मेन्स हेल्थ' के मुताबिक नग्न सोना शुक्राणु की उत्पादकता बढ़ाता है। कसे हुए अंत: वस्त्र और गर्म अंडकोष शुक्राणु के लिए ठीक नहीं माने जाते। यही नहीं अच्छी नींद तनाव के हार्मोन कॉर्टिसोल को नियंत्रित करने में मदद करता है। विशेषज्ञों का कहना है कि विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के साथ नग्न अवस्था में सोने पर ऑक्सीटोसीन का स्तर बढ़ता है।



ज्यादा देर तक बैठने से महिलाओं में

कैंसर का खतरा

ज्यादा देर तक बैठकर काम करने वाली महिलाओं के लिए बुरी खबर है। महिलाएं जो छह घंटे या इससे अधिक बैठकर काम करती हैं उनमें तीन घंटे से कम बैठकर काम करने वाली महिलाओं की तुलना में कैंसर होने का खतरा 10 फीसदी ज्यादा होता है। अमेरिकन कैंसर सोसायटी के शोधकर्ताओं के अध्ययन में यह बात सामने आई है।

अध्ययन में कहा गया है कि जो महिलाएं छह घंटे से ज्यादा बैठकर काम करती हैं उनमें मल्टीपल माइलोमा, ओवारियन कैंसर, इनवैसिव ब्रेस्ट कैंसर होने का खतरा बना रहता है। हालांकि, अध्ययन में यह बात भी सामने आई कि बैठकर काम करने वाले ज्यादातर पुरुषों में कैंसर होने का खतरा नजर नहीं आया।

अध्ययन में अमेरिकन कैंसर सोसायटी कैंसर प्रिवेंशन स्टडी में दाखिला लिए हुए 77,462 महिलाओं और 69,260 पुरुषों से प्राप्त जानकारियों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने महिलाओं एवं पुरुषों के बैठकर काम करने और कैंसर के विकसित होने की स्थितियों की जांच की। अध्ययन की शुरुआत में किसी भी पुरुष अथवा स्त्री को कैंसर नहीं था। यह अध्ययन कैंसर एपिडेमियोलोजी, बॉयोमार्कर्स एंड प्रिवेंशन में प्रकाशित हुआ है।

> महिलाएं छह घंटे से ज्यादा बैठकर काम करती हैं उनमें मल्टीपल माइलोमा, ओवारियन कैंसर, इनवैसिव ब्रेस्ट कैंसर होने का खतरा बना रहता है। हालांकि, अध्ययन में यह बात भी सामने आई कि बैठकर काम करने वाले ज्यादातर पुरुषों में कैंसर होने का खतरा नजर नहीं आया।

ऊंचे कद वाले

पुरुष व महिला

ऊंचे कद वाले पुरुषों व महिलाओं को कैंसर होने का खतरा अधिक होता है। स्वीडन में लंबे समय तक किए गए एक अध्ययन में यह खुलासा हुआ है।

अध्ययन में यह बात भी सामने आई कि लंबाई में 10 सेंटीमीटर की वृद्धि होने पर महिलाओं में कैंसर का खतरा 18 फीसदी, जबकि पुरुषों में 11 फीसदी तक बढ़ जाता है। इसके अलावा, लंबी महिलाओं को स्तन कैंसर का खतरा 20 फीसदी अधिक होता है, जबकि प्रति 10 सेंटीमीटर लंबाई बढऩे पर पुरुषों व महिलाओं दोनों में त्वचा कैंसर का खतरा लगभग 30 फीसदी बढ़ जाता है।

सबसे बड़ा शोध

कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट एंड युनिवर्सिटी ऑफ स्टॉकहोम के शोधकर्ताओं ने 1938-1991 के बीच जन्मे 55 लाख महिलाओं व पुरुषों पर शोध किया, जिनकी लंबाई 100 सेंटीमीटर से 225 सेंटीमीटर के बीच थी।

कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट की प्रमुख शोधकर्ता एमेली बेन्याई ने कहा कि हमारे ज्ञान में, ऊंचाई व कैंसर के बीच संबंध पर महिलाओं व पुरुषों पर किया गया यह अब तक का सबसे बड़ा शोध है।

बेन्याई ने कहा कि हमारा अध्ययन दर्शाता है कि लंबे लोगों को कैंसर होने का खतरा अधिक होता है, लेकिन यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इस बीमारी से ऐसे लोगों की मौत भी अन्य की अपेक्षा अधिक होती है या नहीं।

अध्ययन का निष्कर्ष स्पेन के बार्सिलोना में 54वें सालाना यूरोपियन सोसायटी फॉर पेडियाट्रिक्स इंडोक्रायनोलॉजी की बैठक के दौरान पेश किया गया।

अपने अंतस को फिर से संवारो

अभी आप केवल दहलीज पर ही हैं। आप अपने घर में स्वयं ही बंद हैं। अतः शीघ्रता से अपने मन का दरवाजा खोलें, क्योंकि जब आपका आंतरिक द्वार खुलेगा, तभी आप प्रेम, आनंद, शांति व सुख का अनुभव कर सकेंगे। जब तक आपके दिमाग में आपको इच्छाएं घेरे रखेंगी, आप पूर्ण आराम की स्थिति को उपलब्ध नहीं होंगे। तब आप अपने घर नहीं लौट सकेंगे। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं- आप तब तक योग की स्थिति को उपलब्ध नहीं हो सकते, जब तक आपके अंदर की इच्छाएं समाप्त नहीं हो जातीं। आप इस बात को अपने अनुभव से भी देख सकते हैं।

मैं चाहता हूं कि प्रत्येक घर आश्रम की तरह ही हो। आश्रम से अभिप्राय है, जहां किसी श्रम की आवश्यकता नहीं है। आश्रम अर्थात जहां शरीर, मन और बुद्धि के सभी कार्य स्वत: ही विलीन हो जाएं। प्रत्येक प्रकार का भय, निराशा, तनाव, असुरक्षा की भावना समाप्त हो जाए और आप गहरी शांति का अनुभव करें। इसलिए प्रत्येक घर आश्रम के समान ही होना चाहिए। लोग अच्छे घर की कल्पना करते हैं। वे अपना समय व ऊर्जा घर को सजाने-संवारने में लगाते हैं या फिर वे घर बदलते रहते हैं, परंतु फिर भी वे आराम प्राप्त नहीं करते। आप आराम या विश्राम का अनुभव तभी कर सकते हैं, जब आप स्वयं में केंद्रित हों।

पहला कार्य आराम करना व अंतिम कार्य भी आराम करना ही है। वह जगह जहां आप सबसे ज्यादा आराम व सुविधा का अनुभव कर सकते हैं, वे आप ही हैं। अत- स्वयं की गहराइयों में आराम करना, शांत रहना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए इस पूरे संसार में सबसे सुंदर घर, जो आप में ही निहित है, के लिए आप स्वयं को तैयार करें और उसी में रहें। शांति के लिए आप अपने मन को पूरे संसार से हटा कर स्वयं में केंद्रित करें। इस घर में आपका स्वागत है! जब आप अपने घर में लौट कर आते हैं तो आप पाते हैं कि आपको प्रत्येक जगह अपने घर जैसी ही सुंदर व अच्छी लगती है। अब आप जहां भी जाएंगे, आप दूसरों के लिए सुंदरता व शांति ही लाएंगे। जब आप दुखी होते हैं या थके हुए होते हैं, तब आप में अच्छी चीजें भी घृणा पैदा करती हैं, संगीत भी आपको विचलित करता है, चांद की रोशनी भी आपको अच्छी नहीं लगती। इसलिए यह जरूरी है कि आप पूर्ण आराम करें। और आराम आप तभी कर सकते हैं, जब आप सभी प्रकार की क्रियाओं को पूर्ण समाप्त कर दें। सभी प्रकार की क्रियाएं अर्थात कार्य करना, सोचना, बोलना, देखना, सुनना, सूंघना, स्वाद लेना आदि। निद्रा में केवल अस्वेच्छा से होने वाली क्रियाएं ही होती हैं, जैसे सांस लेना, दिल का धड़कना, पाचन क्रिया व रक्त संचार का होना। परंतु यह भी पूर्ण आराम नहीं है। पूर्ण आराम तो तभी है, जब आपका मन पूर्ण रूप से स्वयं में केंद्रित हो जाए और आप पूर्ण आराम करें। पर यह केवल ध्यान में ही हो सकता है। अभी आप केवल दहलीज पर ही हैं। आप अपने घर में स्वयं ही बंद हैं। अत: शीघ्रता से अपने मन का दरवाजा खोलें, क्योंकि जब आपका आंतरिक द्वार खुलेगा, तभी आप प्रेम, आनंद, शांति व सुख का अनुभव कर सकेंगे। जब तक आपके दिमाग में आपको इच्छाएं घेरे रखेंगी, आप पूर्ण आराम की स्थिति को उपलब्ध नहीं होंगे। तब आप अपने घर नहीं लौट सकेंगे। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं- आप तब तक योग की स्थिति को उपलब्ध नहीं हो सकते, जब तक आपके अंदर की इच्छाएं समाप्त नहीं हो जातीं। आप इस बात को अपने अनुभव से भी देख सकते हैं। जब आप नींद के लिए बिस्तर पर जाते हैं और कोई बात आपको परेशान कर रही होती है तो आप गहरी नींद का अनुभव नहीं कर पाते। इसलिए बहुत महत्वाकांक्षी लोग गहरी निद्रा का अनुभव नहीं कर पाते, क्योंकि वे मानसिक रूप से आजाद नहीं होते। प्रत्येक इच्छा या महत्वाकांक्षा आंख में रेत के कण के समान है। अपनी इच्छा से मुक्ति पाने का एक तरीका यह भी है कि आप अपनी इच्छा को इतना बड़ा बना लें कि वह आपको दुख न दे, क्योंकि एक बड़ा पत्थर या चट्टान आपकी आंखों को हानि नहीं पहुंचाता, जबकि रेत का एक कण आंखों को नुकसान पहुंचा देता है।

शिक्षा सुधारों को मिली नई रफ्तार, सरकारी स्कूलों में लौटा भरोसा

48,465 नई नियुक्तियां, 66 हजार से अधिक पदोन्नतियां; नामांकन बढ़कर 73 लाख पहुंचा

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने शिक्षा को प्रदेश के सामाजिक और आर्थिक भविष्य की आधारशिला बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में जरूरी सुधार करते हुए सरकारी विद्यालयों में गुणवत्ता, समान अवसर, सुरक्षा और आधुनिक सुविधाओं के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। 15 दिसम्बर 2023 से अब तक शिक्षक-कार्मिक प्रबंधन, नामांकन, परीक्षा परिणाम, बालिका शिक्षा, डिजिटल लर्निंग, समावेशी शिक्षा और विद्यालयी आधारभूत संरचना-हर प्रमुख क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है।

मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप शिक्षा विभाग का लक्ष्य केवल योजनाओं का विस्तार नहीं, बल्कि ऐसी विश्वसनीय सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था तैयार करना है जहां प्रत्येक बच्चा समय पर पाठ्य-पुस्तक पाए, योग्य शिक्षक से पढ़े, सुरक्षित और गरिमापूर्ण वातावरण में विद्यालय आए तथा तकनीक और आधुनिक संसाधनों तक समान पहुंच प्राप्त करे। राज्य सरकार ने नीति और नीयत से धरातल पर परिणाम उतारकर दिखाए हैं। सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता का सबसे मजबूत आधार शिक्षक और विभागीय कार्मिक हैं।

इसी दृष्टि से विभिन्न संवर्गों में अब तक कुल 48,465 नई नियुक्तियां दी गई हैं। विद्यालयों में 19,000 सहायक कर्मचारियों की पदस्थापना की है। साथ ही 66,047 पदोन्नतियां प्रदान की गई हैं, जो पूर्ववर्ती सरकार के पूरे कार्यकाल में की गई 58,339 पदोन्नतियों से अधिक हैं।

आधारभूत संरचना पर अब तक 2,723 करोड़ रुपये से अधिक: व्ययशिक्षा व्यवस्था को मजबूती देने के लिए उठाए गए इन कदमों से सरकारी विद्यालयों में नामांकन बढ़कर 73 लाख हुआ है। नए सत्र के साथ ही कक्षा 1 से 12 तक 4.42 करोड़ पाठ्य-पुस्तकें समय पर वितरित की गई हैं।

विद्यालयों के आधारभूत संरचना पर अब तक 2,723 करोड़ रुपये से अधिक व्यय किए जा चुके हैं। वहीं, अनुकम्पा नियुक्तियों के प्रकरणों का संवेदनशील और समयबद्ध निस्तारण भी सुनिश्चित किया गया है। गत दो माह में बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक, प्रयोगशाला सहायक, कनिष्ठ सहायक व सहायक कर्मचारी संवर्ग के 83 प्रकरण निस्तारित कर नियुक्तियां दी गई।

शैक्षणिक सत्र की समयबद्ध शुरुआत, व्यवस्था में आया अनुशासन: सरकारी और निजी विद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया को समान समय पर प्रारम्भ करने तथा राजकीय विद्यालयों में और अधिक नामांकन बढ़ाने के उद्देश्य से शैक्षणिक सत्र 2026-27 की शुरुआत 1 अप्रैल से की गई। कक्षा 10 और 12 के परिणाम मार्च 2026 के अंतिम सप्ताह में जारी किए गए, ताकि विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रवेश के लिए इंतजार न करना पड़े। कोविड के बाद लगातार गिरते नामांकन की प्रवृत्ति को पहली बार पलटते हुए राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या गत वर्ष के लगभग 72.50 लाख से बढ़कर 73 लाख हो गई है।



इस वर्ष कक्षा 10 का बोर्ड परीक्षा परिणाम 94 प्रतिशत से अधिक रहा। 23 प्रतिशत से अधिक बालिकाओं तथा 20 प्रतिशत बालकों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। कक्षा 12 में विज्ञान और कला वर्ग का परिणाम 97.5 प्रतिशत तथा वाणिज्य वर्ग का परिणाम 93.5 प्रतिशत रहा।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन के अंतर्गत राज्य सरकार के कार्यकाल में निजी विद्यालयों को कुल 2,146.35 करोड़ रुपये का पुनर्भरण किया गया है। सत्र 2025-26 में 2.37 लाख नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नि:शुल्क प्रवेश दिया गया तथा सत्र 2026-27 में 4.39 लाख नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नि:शुल्क प्रवेश से जोड़ने की कार्रवाई की गई है।

बालिकाओं की विद्यालय तक पहुंच और निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए अब तक 13,85,373 से अधिक साइकिलें वितरित की जा चुकी हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में 116 ओपन जिम, 455 स्मार्ट किचन और 129 लॉन्ड्री मशीनें उपलब्ध कराई गई हैं। वहीं, मेधावी विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने के लिए 88,724 इंटरनेट कनेक्शन सहित नि:शुल्क टैबलेट उपलब्ध कराए गए हैं। फरवरी 2024 से अब तक तीन शैक्षणिक सत्रों के चिन्हित विद्यार्थियों को कुल 19,766 अंग एवं सहायक उपकरण वितरित किए गए।

राज्य सरकार के कार्यकाल में 179 विद्यालय भवनों का निर्माण 182.50 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है। जर्जर कक्षा-कक्षों के स्थान पर 7,945 अतिरिक्त कक्षा-कक्षों का निर्माण 757 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है।

प्रदेश के सभी 41 जिलों में तकनीकी सर्वे के आधार पर लगभग 12,500 करोड़ रुपये का तीन-वर्षीय रोडमैप तैयार किया गया है। जिसके अंतर्गत 3,587 नए विद्यालय भवनों पर लगभग 2,487.75 करोड़ रुपये, 83,783 नवीन कक्षा-कक्षों पर लगभग 8,378.30 करोड़ रुपये, 22,589 विद्यालयों में मेजर रिपेयर पर लगभग 1,129.45 करोड़ रुपये तथा 13,616 नए शौचालय परिसरों पर लगभग 340.40 करोड़ रुपये के कार्य प्रस्तावित हैं।

डिजिटल शिक्षा में बड़ी छलांग, 1,087 करोड़ रुपये का निवेश: राजस्थान में डिजिटल शिक्षा के महत्व को देखते हुए विद्यार्थियों को इससे जोड़ने के लिए लगभग 107 करोड़ रुपये की लागत से 9,000 स्मार्ट क्लास स्थापित की जाएंगी। लगभग 100 करोड़ रुपये की लागत से 80,000 टैबलेट उपलब्ध कराए जाएंगे तथा करीब 880 करोड़ रुपये की लागत से 7,000 आईसीटी लैब स्थापित की जाएंगी।

राजस्थान पुलिस की अनूठी पहल

अनुसंधान एवं अभियोजन में मार्गदर्शक बनेगी 'विधि दर्पण' पुस्तिका



- डीजीपी राजीव कुमार शर्मा ने किया प्रथम अंक का विमोचन

जयपुर (कासं)। अनुसंधान अधिकारियों को कानूनी प्रावधानों और न्यायिक निर्णयों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राजस्थान पुलिस ने नवाचार करते हुए 'विधि दर्पण' पुस्तिका प्रकाशित की है। अनुसंधान एवं अभियोजन को अधिक प्रभावी, विधिसम्मत और न्यायिक अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने के लिए तैयार इस पुस्तिका में उच्चतम न्यायालय एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के महत्वपूर्ण चयनित निर्णयों को संकलित किया गया है। पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने पुलिस मुख्यालय में सोमवार को पुस्तिका के प्रथम अंक का विमोचन किया। शर्मा ने कहा कि यह पुस्तिका पुलिस अधिकारियों के लिए अनुसंधान, साक्ष्य संकलन और अभियोजन प्रक्रिया में एक उपयोगी संदर्भ सामग्री साबित होगी।

पुस्तिका को चार प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में उच्चतम न्यायालय के महत्वपूर्ण निर्णय रखे गए हैं। इनमें गिरफ्तारी के आधार लिखित में देना अनिवार्य होने, अग्रिम अनुसंधान के लिए मजिस्ट्रेट की अनुमति अनिवार्य, दीवानी विवाद और छल के अपराध तथा पहचान का साक्ष्य एवं शिनाख्त परेड जैसे विषय शामिल हैं। इसके द्वितीय भाग में राजस्थान उच्च न्यायालय के अनुसंधान में न्यायिक हस्तक्षेप की सीमा और अवरोधन के सुरक्षा उपाय एवं एफआईआर से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों का संकलन है। तृतीय भाग में एक अनुसंधान अधिकारी के लिए उपयोगी आठ आधारभूत एवं स्मरणीय निर्णय दिए गए हैं। चतुर्थ भाग में व्यावहारिक संदर्भ सामग्री शामिल की गई है। इनमें अनुसंधान अधिकारियों के व्यवहार में लाने योग्य बिंदुओं को प्रकाशित किया गया है। इसके साथ ही, पुस्तिका में नवीन एवं प्राचीन कानूनों की समतुल्य धाराओं की सारणी के साथ दंड प्रक्रिया संहिता और भारतीय न्याय संहिता की महत्वपूर्ण धाराओं का भी उल्लेख किया गया है। इसमें पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, सीआईडी-सीबी महानिरीक्षक पुलिस व पुस्तिका प्रधान संपादक श्रीमती के. बी. वंदना और उप महानिरीक्षक पुलिस (अपराध शाखा) राशि डोगरा डूडी के विशेष आलेख भी प्रकाशित किए गए हैं। इस पुस्तिका का हर तीन माह में प्रकाशन किया जाएगा।

पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, डीजी (कानून व्यवस्था) संजय अग्रवाल, डीजी (स्पेशल ऑपरेशन) आनंद श्रीवास्तव, डीजी (ट्रैफिक) मालिनी अग्रवाल, एडीजी (क्राइम) बिपिन पाण्डेय सहित अन्य पुलिस अधिकारियों ने विमोचन किया।

चौथे चरण के मतदान में मुस्तैद रहा प्रशासन, संदेश नायक ने संभाली कमान

-बस्सी, तूंगा, जमवारामगढ़ एवं आंधी की ग्राम पंचायतों में सरपंच एवं वार्ड पंच पदों के लिए मतदान संपन्न

-मतदाताओं से संवाद कर लिया व्यवस्थाओं का फीडबैक, निर्भीक एवं उत्साहपूर्ण भागीदारी की सराहना



जयपुर (कासं)। पंचायतीराज आम चुनाव के चतुर्थ चरण के तहत सोमवार को जयपुर जिले की चार पंचायत समितियों बस्सी, तूंगा, जमवारामगढ़ एवं आंधी की 140 ग्राम पंचायतों में सरपंच एवं वार्ड पंच पदों के लिए मतदान संपन्न हुआ। मतदान के दौरान लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी को लेकर मतदाताओं में उत्साह देखने को मिला। निर्वाचन प्रक्रिया को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) संदेश नायक ने विभिन्न मतदान केंद्रों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर मतदाताओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं, मतदान दलों की व्यवस्थाओं एवं सुरक्षा इंतजामों की जानकारी ली तथा संबंधित अधिकारियों एवं मतदान कार्मिकों से संवाद कर व्यवस्थाओं की स्थिति जानी तथा मतदान प्रक्रिया के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतदान के लिए पहुंचे मतदाताओं से भी सीधा संवाद किया और मतदान केंद्रों पर उपलब्ध सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं के संबंध में फीडबैक लिया। उन्होंने मतदाताओं की निर्भीक एवं उत्साहपूर्ण भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं के गठन में प्रत्येक मत की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिला निर्वाचन अधिकारी संदेश नायक ने चतुर्थ चरण के मतदान में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले सभी मतदाताओं एवं मतदान प्रक्रिया को सुचारू बनाने में सहयोग देने वाले आमजन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने निर्वाचन कार्य में तैनात अधिकारियों, मतदान दलों, पुलिसकर्मियों एवं अन्य कार्मिकों के समन्वित प्रयासों की सराहना करते हुए सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

राज कृतिः नेहा गिरि की पुस्तक ने राजस्थान की महिला कलाकारों और उनकी जीवंत कला को दी नई पहचान



जयपुर (कासं)। राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान अक्सर उसके किलों, वस्त्रों, लोक संगीत और शिल्प से जानी जाती है किंतु इस समृद्ध विरासत के पीछे वे महिलाएँ भी हैं, जिनका जीवन, कौशल और कहानियाँ राज्य की पहचान का अभिन्न अंग हैं। इन्हीं कहानियों को सामने लाती है पुस्तक 'राज कृति - द स्पिरिट ऑफ़ राजीविका वीमेन इन कलर', जिसकी लेखिका नेहा गिरि में केन्द्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय निदेशक हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा विमोचित 'राज कृति' राज्य की पाँच विशिष्ट चित्रकला परंपराओं - राजस्थानी लघु चित्रकला, पिछवाई, बनी-ठनी, मांडना और कावड़ - को राजीविका के स्वयं सहायता समूहों की उन महिला कलाकारों के माध्यम से प्रस्तुत करती है, जिन्होंने अपनी पारंपरिक कला को पहचान, सम्मान और आजीविका का साधन बनाया है।

पुस्तक पर आधारित चर्चा 'ए कन्वर्सेशन बियॉन्ड द पेजेज़' का आयोजन रविवार को बीकानेर हाउस, नई दिल्ली में मुख्य अतिथि, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया था। कार्यक्रम में स्मृति सरन, सदस्य, डाक सेवा बोर्ड, सम्मानित अतिथि तथा रोहित कुमार, प्रमुख आवासीय आयुक्त, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। एक भावपूर्ण क्षण में, पुस्तक में शामिल महिला कलाकारों ने हाथ से बने क्रोशिया के गुलदस्तों और पारंपरिक स्टोल से अतिथियों का स्वागत किया। इसके बाद जोधपुर के लंगा कलाकार मोहम्मद रफ़ीक खान एवं समूह की राजस्थानी लोक प्रस्तुति ने मरुधरा की संगीत विरासत से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पुस्तक प्रस्तुत करते हुए नेहा गिरि ने इसके पीछे की यात्रा साझा की, और इस दौरान 'राज कृति' के चित्र बॉलरूम की दीवारों और छत पर प्रदर्शित किए गए। ग्रामीण आजीविका पहलों, विशेषकर राजीविका की राज्य मिशन निदेशक के रूप में अपने अनुभवों को याद करते हुए, उन्होंने इस कार्य में योगदान देने वाले सभी- विकास अधिकारी, सामुदायिक कार्यकर्ता, स्वयंसेवी संस्थाएँ, मास्टर ट्रेनर, राजीविका के अधिकारी, ग्रामीण विकास विभाग तथा बैंक ऑफ़ बड़ौदा आरसेटीसभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पुस्तक की कहानियाँ किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं बल्कि वर्षों की सामूहिक प्रतिबद्धता और जमीनी भागीदारी का परिणाम हैं।

कार्यक्रम के सबसे यादगार क्षण स्वयं महिला कलाकारों की ओर से आए। प्रतापगढ़ के अरनोद की मांडना कलाकार राधा रैदास ने बताया कि उन्होंने अपनी माँ और दादी को आँगन और दीवारें सजाते देखकर यह कला सीखी। आज वे कैनवास पर चित्र बनाती हैं, प्रदर्शनियों में भाग ले चुकी हैं और कई मंचों पर अपनी कला प्रस्तुत कर चुकी हैं। उन्होंने घूँघट के पीछे के जीवन से दिल्ली के मंच पर अपनी कहानी सुनाने तक की अपनी यात्रा साझा की।

जयपुर की इमला देवी, जो पाँच पीढ़ियों से चली आ रही पारिवारिक सजावटी शिल्प परंपरा को आगे बढ़ा रही हैं, ने अपने उद्यम 'इमला हैंडीक्राफ्ट्स' के बारे में बताया, जो चित्रित कटोरे, ट्रे, जार और अन्य उत्पाद बनाता है। राजीविका के माध्यम से उन्होंने अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए भी आजीविका के अवसर सृजित किए हैं।

जयपुर की लविना जांगिड़ ने बताया कि राजीविका से मिले प्रशिक्षण और सहयोग ने किस प्रकार बचपन के कला-प्रेम को आर्थिक आत्मनिर्भरता में बदल दिया।

वे मंडला आर्ट, डॉट पेंटिंग, पिछवाई से प्रेरित कृतियों और पारंपरिक राजस्थानी मोटिफ़ पर कार्य करती हैं।

रालसा फॉर रोड सेफ्टी कैंपेन 2.0' का शुभारंभ

यात्री बसों, सिटी बसों एवं मिनी बसों का होगा सघन निरीक्षण

जयपुर (कासं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (रालसा), जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय द्वारा आमजन की सड़क सुरक्षा और यात्री वाहनों में वैधानिक सुरक्षा मानकों की पालना सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सोमवार 16 नवंबर 2026 को विशेष राज्यव्यापी अभियान 'रालसा फॉर रोड सेफ्टी कैंपेन' का शुभारंभ किया गया। यह अभियान 2 माह की अवधि दिनांक 16 नवंबर 2026 से 15 जनवरी 2027 तक संचालित किया जाएगा। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर महानगर द्वितीय पल्लवी शर्मा ने बताया कि अभियान के प्रथम दिवस पर आज जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, मोबाइल मजिस्ट्रेट विजय कुमार सिरोहीवाल, परिवहन विभाग, यातायात पुलिस एवं जिला प्रशासन की संयुक्त प्रवर्तन टीम द्वारा जयपुर महानगर द्वितीय क्षेत्र के 14 नंबर रोड एरिया पर सघन जांच अभियान चलाया गया।

इस दौरान स्लीपर कोच, लग्जरी यात्री बसों के साथ-साथ शहरी क्षेत्र में संचालित सिटी बसों और मिनी बसों का विशेष रूप से निरीक्षण किया गया। संयुक्त टीम द्वारा वैधानिक दस्तावेज एवं फिटनेस, वाहनों के वैध फिटनेस प्रमाण पत्र, परमिट, बीमा एवं प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्रों की जांच की गई। सुरक्षा उपकरण एवं आपातकालीन व्यवस्था, बसों में अग्निशमन यंत्रों की उपलब्धता व कार्यशीलता, आपातकालीन निकास द्वार की सुगमता तथा किसी भी प्रकार के अनधिकृत ढांचागत बदलाव की जांच की गई। स्पीड गवर्नर की जांच, सिटी एवं मिनी बसों में निर्धारित गति नियंत्रक उपकरण लगे होने और उनके सुचारू रूप से कार्य करने का भौतिक सत्यापन किया गया। यात्रियों की सुविधा के लिए बसों में शिकायत पेटी की उपलब्धता देखी गई तथा सभी बसों के अंदर स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले स्थान पर राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण का टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर 9928900900 (हिंदी एवं अंग्रेजी संदेश के साथ) चस्पा करवाने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान जिन वाहनों में गंभीर सुरक्षा खामियां या वैधानिक दस्तावेजों का उल्लंघन पाया गया, उनके विरुद्ध परिवहन एवं पुलिस विभाग द्वारा नियमानुसार चालान एवं जब्ती की कार्यवाही की गई। वहीं, जिन बसों में शिकायत पेटी या हेल्पलाइन नंबर प्रदर्शित नहीं था, उनके संचालकों को निर्धारित समय-सीमा में अनिवार्य रूप से इनकी व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु सख्त निर्देश प्रदान किए गए। पल्लवी शर्मा ने जानकारी दी कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा सभी बस ऑपरेटरों एवं वाहन चालकों से अपील की गई है कि वे यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए सभी वैधानिक मानकों की पालना सुनिश्चित करें। साथ ही, आमजन से भी आग्रह किया गया है कि बस संचालन, चालक-परिचालक के व्यवहार या सुरक्षा मानकों से संबंधित किसी भी शिकायत अथवा समस्या के समाधान हेतु प्राधिकरण के हेल्पलाइन नंबर 9928900900 पर नि:संकोच संपर्क करें।

न्यूज इनबॉक्स

जयपुर स्थापना दिवस समारोह का मुख्यमंत्री को दिया निमंत्रण

जयपुर (कासं)। नगर निगम महापौर सुनील कोठारी ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात कर उन्हें जयपुर स्थापना दिवस समारोह में शामिल होने का निमंत्रण दिया। महापौर ने मुख्यमंत्री को समारोह का निमंत्रण पत्र सौंपा। इस दौरान पार्षद प्रतिभा शर्मा, विमल अग्रवाल, शैलेन्द्र भार्गव, सुभाष श्रृंगी एवं पूर्व महापौर पंकज जोशी भी मौजूद रहे।

गहलोत पर अरुण चतुर्वेदी का हमला, बोले- युवाओं से किया धोखा

जयपुर (कासं)। राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरुण चतुर्वेदी ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि उन्हें एकांतवास में जाकर अपने कार्यकाल में किए गए कार्यों और लिए गए निर्णयों का आकलन करना चाहिए। उन्हें अपने कर्मों पर पछतावा होना चहिए, क्योंकि उन्होंने प्रदेश के युवाओं के साथ धोखा किया है। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि अशोक गहलोत को अब कांग्रेस पार्टी ने भी पूरी तरह नकार दिया है। कांग्रेस में गहलोत की बातचीत समाप्त हो चुकी है और पार्टी में उनका सम्मान भी पहले जैसा नहीं रहा है। यही कारण है कि गहलोत मीडिया में बयानबाजी कर स्वयं को राजनीति में प्रासंगिक बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि जिस तरह शहरी क्षेत्रों में जनता ने भाजपा को समर्थन दिया, उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में भी पंचायत चुनाव परिणामों में पार्टी को व्यापक जनसमर्थन मिलेगा। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश के अधिकांश जिला परिषद एवं पंचायत समितियों में भाजपा की जीत होगी। अरुण चतुर्वेदी ने जिला प्रमुख, प्रधान एवं अन्य पदों पर पार्टी के निर्णय को लेकर कहा कि भाजपा एक सक्रिय और लोकतांत्रिक कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। पार्टी नेतृत्व जिस भी कार्यकर्ता के नाम पर सहमति बनाएगा, सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर उसे जिताने का काम करेंगे।

299वें जयपुर स्थापना दिवस पर सजेगी संस्कृति, साहित्य और आस्था की अनूठी छटा

जयपुर (कासं)। गुलाबी नगरी जयपुर के गौरवशाली इतिहास, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक परंपराओं के 299वें स्थापना दिवस के अवसर पर नगर निगम जयपुर द्वारा दो दिवसीय भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। स्थापना दिवस समारोह के तहत धार्मिक आस्था, साहित्य, संस्कृति और परंपराओं का अनूठा संगम देखने को मिलेगा। इन आयोजनों के माध्यम से जयपुर की ऐतिहासिक पहचान एवं सांस्कृतिक वैभव को उत्सव के रूप में मनाया जाएगा। सोमवार को महापौर सुनील कोठारी द्वारा माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े एवं माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात कर जयपुर स्थापना दिवस समारोह का निमंत्रण पत्र देकर कार्यक्रम का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर पूर्व महापौर पंकज जोषी, पार्षद श्रीमति प्रतिभा शर्मा, विमल अग्रवाल, शैलेंन्द्र भार्गव, सुभाष सिघी भी मौजूद रहे।

17 नवम्बर को गणेश निमंत्रण से होगा शुभारंभ, शाम को सजेगी काव्य रसधारा- स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ मंगलवार, 17 नवम्बर को प्रात: 9 बजे मोती डूंगरी गणेश मंदिर में गणेश निमंत्रण अर्पण के साथ होगा। इसके पश्चात सायं 5 बजे बिरला ऑडिटोरियम में कवि सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसमें देशभर के ख्यातनाम कवि एवं कवयित्री अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करेंगे। कवि सम्मेलन में सुप्रसिद्ध वीर रस के कवि हरिओम पंवार (मेरठ), लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कवि एहसान कुरैशी (मुंबई), दिनेश रघुवंशी (फरीदाबाद), सुरेश अलबेला (कोटा), प्रियंशु गजेंद्र (बाराबंकी), राव अजातशत्रु (उदयपुर) एवं कवयित्री दीपिका माही (चित्तौड़गढ़) अपनी काव्य प्रस्तुतियां देंगे। कार्यक्रम का संयोजन जयपुर के एकेश पार्थ करेंगे। हास्य, व्यंग्य, ओज और वीर रस से सजी यह काव्य संध्या स्थापना दिवस समारोह का विशेष आकर्षण रहेगी।

शासन सचिव ने किया राजस्थान संपर्क हेल्पलाइन-181 का निरीक्षण

जयपुर (कासं)। शासन सचिव, पर्यटन विभाग श्रीमती शुचि त्यागी ने सोमवार को राजस्थान संपर्क हेल्पलाइन-181 कॉल सेंटर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पर्यटन, देवस्थान तथा कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग से संबंधित दर्ज परिवेदनाओं एवं उनके निस्तारण की वास्तविक स्थिति की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को आमजन की शिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

कॉल सेंटर की कार्यप्रणाली का लिया जायजा- श्रीमती त्यागी ने कॉल सेंटर की कार्यप्रणाली का अवलोकन कर आमजन द्वारा दर्ज करवाई गई परिवेदनाओं की वस्तुस्थिति की जानकारी ली। उन्होंने कुछ प्रकरणों का स्वयं संज्ञान लेते हुए संबंधित परिवादियों से दूरभाष पर संवाद किया तथा उनकी समस्याओं के संबंध में बिंदुवार जानकारी प्राप्त की। इस दौरान मचकुंड मंदिर की मरम्मत से जुड़े प्रकरण, वरिष्ठ नागरिक तीर्थयात्रा योजना के आवेदनों तथा पर्यटन विभाग के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन पोर्टल से संबंधित शिकायतों की गहन समीक्षा की गई।

आईसीआईसीआई लाइफ इंश्योरेंस ने जयपुर में लगाया शिकायत निवारण शिविर

जयपुर (कासं)। भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) की ओर से मनाए जा रहे शिकायत समाधान माह के तहत आईसीआईसीआई लाइफ इंश्योरेंस ने जयपुर में शिकायत निवारण शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में जीवन बीमा और सामान्य बीमा क्षेत्र की 40 कंपनियों ने हिस्सा लिया। शिविर में आईआरडीएआई के कार्यकारी निदेशक आर.के. शर्मा, आईआरडीएआई के डीजीएम (लीगल) अलीम अफाक, जयपुर की बीमा लोकपाल सचिव सोनाली सरीन, लाइफ इंश्योरेंस काउंसिल के महासचिव आदित्य गुप्ता, मुंबई स्थित काउंसिल फॉर इंश्योरेंस ओम्बड्समैन के सचिव हरिहरासुधन वी., आईसीआईसीआई लाइफ इंश्योरेंस की हेड (कस्टमर सर्विस) अश्विनी बोंडाले और चीफ (लीगल) प्रीति नाहर सहित प्रमुख जीवन और सामान्य बीमा कंपनियों के प्रतिनिधि मौजूद रहे। शिविर में पॉलिसीधारकों ने बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों से सीधे मुलाकात कर अपनी समस्याएं रखीं और शिकायत निवारण की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त की। शिविर में आयोजित प्रमुख सत्रों में शिकायत निवारण व्यवस्था को मजबूत बनाने, पारदर्शिता बढ़ाने के लिए बीमा भरोसा पोर्टल और बीमा लोकपाल व्यवस्था के प्रभावी इस्तेमाल पर चर्चा हुई। आईसीआईसीआई लाइफ इंश्योरेंस की हेड (कस्टमर सर्विस) अश्विनी बोंडाले ने कहा, 'आईसीआईसीआई लाइफ में हम अपने हर काम के केंद्र में ग्राहकों को रखते हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक कैलाश त्रिवेदी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43-ए, माली कॉलोनी चांदपोल बाहर जयपुर से मुद्रित एवं डी-38, प्रधानपथ, चौमू हाउस, सी स्कीम, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक कैलाश त्रिवेदी* । *पीआईबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार।
फोनः 0141-4038281, **Email:-** lokjeewanjpr@gmail.com **भीलवाड़ा कार्यालयः** 207-214, नागौरी गार्डन, लोकजीवन कॉम्पलेक्स, भीलवाड़ा। **फोनः** 01482-355985, Email:- lokjeewan@gmail.com, **मो.** 8306792625